भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : १५

सोमवार १३ जनवरी, '६९

अन्य पृष्ठों पर

राजस्थान सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन १७८

चन्दामामा —सम्पादकीय १७९

प्यार : एक व्यवहार्य तत्त्व —विनोबा १८०

राजस्थान सर्वोदय-सम्मेलन १८१

राजस्थान प्रदेशदान की योजना १८२

आन्दोलन के समाचार १८४

परिशिष्ट

"गाँव की बात"

डा० सम्पूर्णानन्दजी का देहावसान

वाराणसी, १० जनवरी '६९। आज १० बजे दिन में ८० वर्ष की आयु में डा० सम्पूर्णानन्दजी का निधन हो गया। वे रोग-शय्या पर महीनों से पड़े थे। सर्वोदय-परिवार की ओर से हम शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं।

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
फोन : ७२८५

धर्म का राजनीति में कोई स्थान नहीं

हिन्दुस्तान उन सब लोगों का है, जो यहाँ पैदा हुए और पले हैं और जो दूसरे किसी देश का आसरा नहीं ताक सकते। इसलिए वह जितना हिन्दुओं का है उतना ही पारसियों, बेनी इजरायलों, हिन्दुस्तानी ईसाइयों, मुसलमानों और दीगर गैर-हिन्दुओं का भी है। आजाद हिन्दुस्तान में राज्य हिन्दुओं का नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानियों का होगा; और उसका आधार किसी धार्मिक पन्थ या सम्प्रदाय के बहुमत पर नहीं, बल्कि बिना किसी धार्मिक भेद-भाव के समूचे राष्ट्र के प्रतिनिधियों पर होगा। मैं एक ऐसे मिश्र बहुमत की कल्पना कर सकता हूँ, जो हिन्दुओं को अल्पमत बना दे। स्वतंत्र हिन्दुस्तान में लोग अपनी सेवा और योग्यता के आधार पर ही चुने जायेंगे। धर्म एक निजी विषय है, जिसका राजनीति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए। विदेशी हुकूमत की वजह से देश में जो अस्वाभाविक परिस्थिति पायी जाती है, उसीकी बदौलत हमारे यहाँ धर्म के अनुसार इतने बनावटी फिरके बन गये हैं। जब देश से विदेशी हुकूमत उठ जायगी, तो हम इन झूठे नारों और आदर्शों से चिपके रहने की अपनी इस बेवकूफी पर खुद ही हँसेंगे।१

सब धर्म ईश्वर के दिये हुए हैं। लेकिन वे मनुष्य की कल्पना के हैं। और मनुष्य उनका प्रचार करता है, इसलिए वे अपूर्ण हैं। ईश्वर का दिया हुआ धर्म पहुँच के परे, अगम्य है। मनुष्य उसे अपनी भाषा में रखता है, उसका अर्थ भी मनुष्य करता है। किसका अर्थ सच्चा है? सब अपनी-अपनी दृष्टि से, जब तक उस दृष्टि के अनुसार वे बरतते हैं तबतक सच्चे हैं। लेकिन सबका गलत होना भी असम्भव नहीं। इसलिए हम सब धर्मों की ओर समभाव रखें। इससे अपने धर्म के प्रति हममें उदासीनता नहीं आती, लेकिन अपने धर्म के प्रति हमारा जो प्रेम है वह अन्धा न होकर ज्ञानमय बनता है, और इसलिए वह ज्यादा सात्विक, ज्यादा निर्मल बनता है। सब धर्मों की ओर समभाव हो तभी हमारे दिव्यचक्षु खुल सकते हैं। धर्मान्धता और दिव्य दर्शन में उत्तर-दक्षिण का अन्तर है। धर्म का सच्चा ज्ञान होने पर सारी अड़चनें दूर होती हैं और सब धर्मों के बीच समभाव पैदा होता है।२

सब विदेशियों को यहाँ रहने और बसने की पूरी आजादी है, बशर्ते कि वे अपने को इस देश की जनता से अभिन्न समझें। जो विदेशी यहाँ अपने अधिकारों के लिए विशेष संरक्षण चाहते हों, उन्हें भारत आश्रय नहीं दे सकता। अधिकारों के लिए संरक्षण माँगने का अर्थ यह होगा कि वे यहाँ ऊँचे दरजे के आदमियों की तरह रहना चाहते हैं। लेकिन उन्हें ऐसा नहीं करने दिया जा सकता, क्योंकि उससे संघर्ष पैदा होगा।३

—मो० क० गांधी

(१) 'हरिजन सेवक' : ९-८-'४२ (२) 'लाइफ ऑव मोहनदास करमचन्द गांधी' : खण्ड-३, पृष्ठ-३५९-६० (३) 'हरिजन' : २९-९-'४६

www.vinoba.in

प्रदेशदान की सिद्धि के लिए एकजुट होकर पूरी शक्ति से लगने का आह्वान

गांधी-शताब्दी वर्ष में राजस्थान के हर गाँव में ग्राम-स्वराज्य का संदेश पहुँचाने का संकल्प

—राजस्थान में आन्दोलन एक नये ऐतिहासिक मोड़ पर—

हमारी आजादी के नायक और राष्ट्र के कर्णधार गांधीजी बराबर हमारा ध्यान इस ओर खींचते रहे कि सच्चे माने में स्वराज्य तभी हुआ मानना चाहिए, जब देश के लाखों गाँवों का विकास हो और सबसे गरीब और दुःखी को उसका लाभ पहले मिले। गांधीजी ने कल्पना की थी कि स्वतंत्र भारत में गाँव देश की प्राथमिक इकाई बनेगा, इस इकाई को और खेती तथा गाँवों के उद्योगों के विकास को प्राथमिकता दी जायगी और इस सबके फलस्वरूप हर इकाई अपने में भरी-पूरी, स्वाश्रयी, और स्वायत्त, पर एक-दूसरे से सहकार के धागे में बँधी हुई, और सब मिलकर पूरे देश और अखिल मानवता से अनेक रूपों में जुड़ी हुई होगी।

राजस्थान प्रदेश का यह सर्वोदय-सम्मेलन अनुभव करता है कि ग्राम-स्वराज्य का बापू का यह सपना साकार होना बाकी है और इसमें देर होना देश की आर्थिक, औद्योगिक, राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक, हर प्रकार की सही दिशा की प्रगति के लिए हानिकर है।

इस ग्राम-स्वराज्य की सिद्धि के लिए विनोबाजी ने भूदान-ग्रामदान का एक सक्षम क्रान्तिकारी कार्यक्रम देश को दिया है और यह सन्तोष की बात है कि वह कार्यक्रम अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है। देश के कई प्रदेशों में एक से अधिक जिले पूरे ग्रामदान में शामिल हुए हैं। बिहार में तो कुल गाँवों के आधे से अधिक, पूरे उत्तर बिहार के ६ जिले, ग्रामदान में आ गये हैं। बिहार के अलावा उत्कल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाड और महाराष्ट्र ने भी संपूर्ण प्रदेशदान का संकल्प जाहिर किया है और उसकी सिद्धि में लगे हैं।

देश के अन्य भागों की तरह राजस्थान के सर्वोदय-कार्यकर्ता भी स्वराज्य के बाद इन पिछले १५-२० वर्षों में पूज्य विनोबाजी के मार्गदर्शन में चल रहे, सर्वोदय-आन्दोलन के जरिए जनता की शक्ति जागृत व संगठित करने का प्रयास करते रहे हैं। यहाँ भी अब-तक १ हजार से ऊपर ग्रामदान हो चुके हैं। किन्तु मानना चाहिए कि समय के तकाजे को देखते हुए यह प्रगति बहुत ही धीमी है। पिछले दिनों प्रदेश की लोकशक्ति शराबबन्दी के महत्त्वपूर्ण आन्दोलन में लगी और उसका असरकारक परिणाम भी सामने आया। इससे निश्चय ही कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास और शक्ति जगी। लेकिन आवश्यकता है और पूज्य विनोबाजी ने राजस्थान के कार्यकर्ताओं को सही, सामयिक संकेत किया है कि प्रदेश की पूरी शक्ति प्रदेश के संपूर्ण ग्रामदान के लक्ष्य की सिद्धि में लग जाय।

दुर्भाग्य से राजस्थान के कई भागों में भीषण अकाल की स्थिति बनी है। स्वाभाविक ही ऐसे समय जनता की राहत और पशुधन की रक्षा के लिए यथाशक्ति सेवा-कार्य किया जाना जरूरी है। लेकिन यह साफ समझना होगा कि दुष्काल की स्थिति आये दिन बने, वह स्थिति आ ही जाय, तब भी जनता बेबसी व नीति-धैर्य की कमी की शिकार न हो तथा राहत वक्त पर व ठीक लोगों के पास पहुँचे, इसके लिए भी जरूरी है कि प्रदेश की जनता में, मुख्यतः गाँव-गाँव के लोगों में, सामुदायिक भावना, आत्म-विश्वास व आत्म-निर्भरता बढ़े।

इस प्रकार चाहे शराबबन्दी सफल करने की बात हो, चाहे जनता के आत्मविश्वास को बढ़ाने व अकाल आदि संकट के निवारण व उस समय के सेवाकार्य को ठीक अंजाम देने का काम हो। ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य के बुनियादी कार्य को आगे बढ़ाना व जल्दी-से-जल्दी कामयाब करना हर तरह से आवश्यक, शुभ और कल्याणकारी है।

राजस्थान प्रदेश सर्वोदय-सम्मेलन गांधी-शताब्दी के इस वर्ष में प्रदेशदान के लिए पूज्य बाबा का सन्देश आन्दोलन को गतिशील बनाने के लिए एक शुभ लग्न व शुभ संकेत मानता है। इस लक्ष्य की ओर मनोयोगपूर्वक सारी कार्यकर्ता-शक्ति एकजुट होकर लग जाय, ऐसा अवसर उपस्थित हुआ है। अतः यह सम्मेलन गांधीजी के ग्राम-स्वराज्य में विश्वास रखनेवाले भाई-बहनों को अब बिना समय खोये, इस कार्य में लगने के लिए आवाहन करता है। विश्वास है कि प्रदेश की जनता इस क्रान्तिकारी काम के लिए तत्पर हो जायगी और सर्वोदय-विचार-प्रेमी संस्थाएँ, कार्यकर्ता, गांधी-शताब्दी की अवधि में प्रदेश-दान का संकल्प कर उसकी सर्वांङ्ग सिद्धि में लग जायेंगे।

(३०-३१ दिसम्बर '६८ को जयपुर में आयोजित १५ वें राजस्थान सर्वोदय-सम्मेलन का निवेदन)

राजस्थान प्रदेशदान का सामूहिक संकल्प

"हम महसूस करते हैं कि देश को शक्तिशाली, समृद्ध और सुखी बनाने के लिए गांधीजी की ग्राम-स्वराज्य की जो कल्पना थी उसे साकार करना आवश्यक है। विनोबाजी की ग्रामदान की योजना ग्राम-स्वराज्य की स्थापना का उत्तम उपाय है। परिस्थिति की माँग है कि यह काम जल्दी-से-जल्दी सम्पन्न हो।

अतः हम संकल्प करते हैं कि गांधी-शताब्दी के इस वर्ष में राजस्थान के सब गाँवों में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का विचार पहुँचाकर उसके लिए सहमति प्राप्त करेंगे तथा प्रदेश-दान के काम को पूरा करने में अपनी अधिक-से-अधिक शक्ति लगायेंगे।"

[१५ वें सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर यह संकल्प सामूहिक रूप से दुहराया गया।]

सम्पादकीय

चन्दामामा

शायद ही कोई बच्चा होगा जिसने अपनी माँ से चन्दामामा की माँग न की हो, और शायद ही कोई माँ हो जिसने चन्दामामा का नाम लेकर अपने बच्चे को खिलाया न हो, बहलाया न हो। दूर बैठे इस चाँद ने न जाने कितने बच्चों को कितनी खुशी दी है, कवि को कितनी कल्पना, और प्रेमी को न जाने कितना दर्द! सूर्य की मनुष्य ने पूजा की है, लेकिन हृदय उसने चाँद को ही दिया है। प्रकृति से मिलने की चेष्टा में न जाने कब चन्द्रमा मनुष्य की चिर आकांक्षा का विषय बन गया, और मनुष्य अपनी कल्पना के उड़नखटोले में बैठकर उस तक पहुँचने की कोशिश करने लगा। युगों की कोशिश के बाद अब मनुष्य अपने चन्दामामा को छू लेने के करीब है, और वह दिन दूर नहीं है जब वह अचानक कूदकर उसकी गोद में जा बैठेगा।

कौन पहले पहुँचेगा, रूस का उड़ाका या अमेरिका का, यह चाँद की दृष्टि से कोई बड़ी बात नहीं है। चाँद धरती से बहुत दूर है—इतनी दूर कि वह पहचान भी नहीं सकता कि कौन रूसी है, कौन अमेरिकी है। पहुँचनेवाले मनुष्य चाँद को अपना देश बतायेंगे, अपना झंडा दिखायेंगे, लेकिन चाँद खुद इन चीज़ों को नहीं जानता। धरती के जिन बेटों को उसने आज तक कभी देखा नहीं, उनकी भेदभरी भाषा वह क्या जाने? बेटों से भेदों की यह सौगात पाकर चाँद को कितना आश्चर्य होगा?

चन्द्रलोक पहुँच तो हम गये, लेकिन पहुँचने के बाद हम वहाँ क्या करेंगे? चन्द्रमा के टुकड़े काटकर अलग-अलग कब्जा करेंगे, और अपने-अपने झंडे फहरायेंगे? कारखाने बनायेंगे? पृथ्वीलोक के लोगों के सैर-सपाटे के लिए होटल और सिनेमाघर खोलेंगे? या, सबसे पहले चाँद पर बैठकर पूरी पृथ्वी को उड़ा देने के लिए बम के अड्डे कायम करेंगे?

आसमान में यंत्र-चालित 'सैटेलाइट' उड़ रहे हैं। किसलिए उड़ रहे हैं? 'शत्रु' का भेद लेने के लिए। भेद लेने और बम गिराने के लिए मनुष्य ने अपने नये विज्ञान से आसमान का इस्तेमाल कर लिया है। चाँद के लिए उसके पास क्या इससे भिन्न कोई योजना है? जो मनुष्य अपने रहने की धरती को उड़ा देने की धमकी दे रहा है, वह कुछ दिनों में चाँद को भी वही धमकी देगा। उसको चाँद तक पहुँचने की प्रेरणा मिली है शत्रु के भय से, और विज्ञान मिला है प्रतिरक्षा की योजना से। आज का सारा 'स्पेस विज्ञान' जुड़ा हुआ है प्रतिरक्षा से। जिस पुरुषार्थ की मूल प्रेरणा भय हो, घृणा हो, दमन हो, शोषण हो उसमें से जो भी परिणाम निकलेगा उस पर उस मूल प्रेरणा का रंग रहेगा ही।

विज्ञान ने हमें अपार बुद्धि दी, शक्ति दी, साधन दिये, लेकिन नयी प्रेरणा वह कहाँ से लाये? सरकार और बाजार के हाथ में पड़े हुए विज्ञान में दमन और मुनाफाखोरी के सिवाय दूसरी मानवीय प्रेरणा कैसे आयेगी? नयी प्रेरणाओं का नया विज्ञान अभी हमें मिला नहीं।

चाँद को उसके घर जाकर हम जब देखेंगे तब देखेंगे, लेकिन दुनिया में हम क्या देख रहे हैं? हमारे सामने दो दृश्य हैं—एक पड़ोसी से हटे हुए मनुष्य का, और दूसरा मनुष्य से हटे हुए विज्ञान का। जो मनुष्य अपने पड़ोसी से अलग हो गया, वह प्रकृति को लेकर पड़ोसी का सिर तोड़ेगा, और तोड़ने की अपनी शक्ति को विज्ञान का वरदान घोषित करेगा।

कितनी अजीब बात है कि मनुष्य चाँद के पास तो पहुँच रहा है, लेकिन सामने की दीवार की आड़ में बैठे हुए पड़ोसी के पास नहीं पहुँच पा रहा है। बुद्धि और विज्ञान ने हमें चाँद तक पहुँचा दिया लेकिन पड़ोसी के पास पहुँचने के लिए तो दिल चाहिए। हृदय नहीं तो विज्ञान अज्ञान है, और दृष्टि नहीं तो आत्मज्ञान अंधविश्वास। मनुष्य ऐसे ही अधूरे विज्ञान और आत्मज्ञान का शिकार बना हुआ है। वह पड़ोसी से दूर और चाँद के पास जा रहा है।

चाँद की प्राप्ति एक कौतुक है, भले ही आत्यंतिक पुरुषार्थ का कौतुक हो, पर पड़ोसी से जुड़ना मनुष्य के जीवन-मरण की समस्या है। इस समस्या को वह कैसे सुलझायेगा? विज्ञान और आत्मज्ञान की पूँजी उसके पास कम नहीं है, लेकिन अपने चारों ओर उसने सत्ता और सम्पत्ति की जो दीवारें खड़ी कर ली हैं, जो संस्थाएँ बना ली हैं, जो सारे भय और अविश्वास विकसित कर लिये हैं, उनके कारण उस पूँजी का लाभ हमें मिल नहीं पा रहा है। लाभ तब मिलेगा जब हम पुराने में से कुछ छोड़ने, और नया लाने के लिए तैयार होंगे। जो विचार, जो व्यवस्था, जो परंपरा या जो संस्था, मनुष्य को मनुष्य न मानती हो, वह चाहे प्राचीन के नाम में चलती हो या नवीन के, लेकिन तुरन्त छोड़ने लायक है। उसे छोड़कर ही हम एक नये जीवन और संस्कृति में प्रवेश कर सकेंगे।

जो पुरुषार्थ चन्द्रमा तक पहुँचने में है, उससे कम पुरुषार्थ पड़ोसी तक पहुँचने में नहीं है। अंतर इतना है कि एक पुरुषार्थ चकाचौंध करके भी विध्वंसकारी हो सकता है, किन्तु दूसरे में कल्याण ही कल्याण है।

जिस दिन हम अपने और पड़ोसी के बीच की दूरी दूर कर लेंगे, उस दिन चाँद और पृथ्वी भी एक हो जायेंगे। पड़ोसी को पाकर मनुष्य सारी सृष्टि को पा लेगा; अपनी नयी सृष्टि बना देगा। ●

भारत में जिलादान	११	प्रखंडदान	५४९	ग्रामदान	८६०२६
बिहार	,,	७	,,	३३५	,,	३९०८५
उत्तर प्रदेश	,,	२	,,	७४	,,	१३१५२
तमिलनाड	,,	१	,,	५०	,,	५,३००
मध्यप्रदेश	,,	१	,,	१८	,,	४,१५२

संकल्पित प्रान्तदान : ७—बिहार, उत्तर प्रदेश, तमिलनाड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्यप्रदेश।

८-१-६९

—कृष्णराज मेहता

www.vinoba.in

प्यार : एक व्यवहार्य तत्त्व

विनोबा

आज का यह बहुत मंगल दिन दुनिया भर में मनाया जाता है। भगवान ईसा मसीह का आज जन्म-दिवस है। वैसे तो हर एक दिन मंगल ही है। जिस दिन हमें शुभ प्रेरणा होती है, हमारे मन में शुभ संकल्प पैदा होता है, वह शुभ दिन है। फिर भी कुछ दिन ऐसे होते हैं, जिस दिन की प्रेरणा बहुत शुभ होती है। ऐसे दिनों में आज का यह दिन है। दुनिया में कोई देश नहीं होगा, जहाँ आज का दिन नहीं मनाया जायेगा। क्या दिया ईसा मसीह ने हमको? उन्होंने ऐसी चीज दी, जिसे दुनिया भर के व्यवहार-वेत्ता, अव्यवहार्य मानते आये हैं। 'दुश्मन पर प्यार करो, उसे प्रेम से जीतो', इसे व्यवहार-वेत्ताओं ने अव्यवहार्य माना है। लेकिन सूक्ष्मता से देखने पर मालूम होता है कि इससे बढ़कर व्यवहार्य चीज नहीं हो सकती है। 'दुश्मन पर प्यार करो' इसमें 'इनिशियेटिव' अपने हाथ में रहता है, सामनेवाले के हाथ में नहीं रहता। वह चाहे मेरा द्वेष करे, चाहे प्यार, मेरा 'इनिशिएटिव' मेरे हाथ में। मुझे क्या करना है, यह उससे सीखना नहीं है। मैं वह सीख चुका हूँ। वह चाहे जो करे, मुझे प्यार ही करना है।

यह बहुत बड़ी बात है। इससे बढ़कर व्यवहार्य बात नहीं हो सकती। चाहे दुनिया कुछ भी करे, मुझ पर जो भी आफत गुजरे, मैं वही करूँगा जो मुझे करना चाहिए। जिन लोगों ने ईसा को क्रूस पर लटकाया, उनके लिए ईसा ने क्या कहा? अत्यंत शारीरिक वेदना का अनुभव करते हुए वे बोले, "भगवान उन्हें क्षमा कर। वे जानते नहीं हैं कि वे क्या कर रहे हैं! वे जानते होते तो ऐसा नहीं करते। इसलिए हे प्रभु तू उन्हें क्षमा कर।" इससे बढ़कर क्षमा का आदर्श क्या हो सकता है! मरते हुए भी प्रेम ही करना, क्षमा ही करना।

अनेक सम्राट आये और गये, उन्हें कोई याद नहीं करता। लेकिन आज के दिन ईसा को सारी दुनिया याद करती है। प्रभु ईसा का हम पर जो उपकार है, वह कभी भुलाया नहीं जायेगा। दो-ढाई हजार साल से सतत प्रेरणा जो दे रहा है, वह असफल माना जायेगा तो सफल किसे माना जायेगा? हजार-हजार साल हुए तो भी जिन्हें लोग याद करते हैं, वे असफल माने जायेंगे कि जिन्हें याद नहीं किया जाता है, वे? लेकिन युनिवर्सिटीवाले बच्चों से रटवाते हैं—फलाने राजा का जन्म फलाने साल में हुआ, उसने यह-यह काम किया, फलाने साल में वह मरा। बच्चे याद नहीं करते हैं, इसलिए कहा जाता है कि ३३ प्रतिशत याद करो तो भी चलेगा! कितना भी किया जाय तो भी उन नामों को लोग उठानेवाले नहीं हैं। नाम तो उन्हींका उठानेवाले हैं, जिन्होंने सच्ची राह दिखाई।

ईसा ने हमें सिखाया कि तुम आत्मा हो, देह नहीं हो। सामनेवाला जो करे वैसा करना, गुस्सा करे तो गुस्सा करना, ऐसा स्याहीचूस बनना तुम्हारा काम नहीं है। वह हँसमुख रहेगा, तो तुम हँसमुख बनोगे और वह टेढ़ा मुँह करेगा तो तुम्हारा मुँह टेढ़ा होगा, ऐसे पुरुषार्थहीन मत बनो। तुम हमेशा हँसते रहो।

यही बात मैं गाँववालों को समझाता हूँ कि तुम्हारा भला तुम्हारे हाथ में है। पार्टीवाले उनको कहेंगे कि हमें वोट दो तो हम तुम्हें स्वर्ग में पहुँचायेंगे। हमारे स्वर्ग का 'मैनीफेस्टो' देख लो। कोई उन्हें यह नहीं समझाता कि तुम्हारा स्वर्ग और तुम्हारा नरक तुम्हारे ही हाथ में है। तुम्हारा उद्धार तुम्हारे ही हाथ में है। ये पार्टीवाले अहंकार-प्रयुक्त हैं। भगवान ने गीता में अर्जुन से कहा कि "ये मर चुके हैं। क्योंकि उन्होंने अहंकार का आश्रय लिया। तू निमित्त बन।" "मयैवैते निहता: पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।"

मैं यह कई दफा बोल चुका हूँ कि 'पॉलिटिक्स आउटडेटेड' हो गयी है। अब नये जमाने में अध्यात्म और विज्ञान ही टिकेगा। राजनीति, धर्म, पंथ मर चुके हैं। गीता में भगवान यही कहते हैं, वे मर चुके हैं। भगवान उन्हें खतम कर चुका है। हे अर्जुन, तुम जरा उठ खड़े हो, वे मर चुके हैं। जनता यही करे, उठ खड़ी हो। ग्रामदान में हम यही समझाते हैं कि तुम्हारा उद्धार तुम्हारे हाथ में है।

भगवान ईसा ने हमें यही सिखाया कि अपने पर जितना प्यार करते हो, सुबह उठकर अपने को नहलाया, अपने को खिलाया, कितना प्यार किया अपने पर! वही प्यार पड़ोसी पर करो। कल एक बेलजियन बहन हमारे पास आयी थी। उसने सुना कि यहाँ विशेष काम होने जा रहा है, सारा बिहार ग्रामदान में आ गया है, लोग अपने पाँव पर खड़े होंगे, पराङ्मुख नहीं बनेंगे, यह देखने के लिए वह आयी और हमसे मिली। क्रिस्तमस के निमित्त उसने हमें साढ़े सात तोला स्वर्ण-मुद्राएँ अर्पित कीं। कहा कि किसी गरीब के खेत में इस पैसे से कुआँ बनेगा तो भगवान ईसा मसीह की दया से खेत फलेगा। और उस बहन ने मुझसे क्या माँगा? उसने कहा—"आपकी पुरानी धोती मुझे दीजियेगा और धोती पा करके वह बहुत प्रसन्न हुई। बड़ी श्रद्धा और प्रेम से उसने वह धोती ली। मैं ताज्जुब में रह गया कि ४० साल की यह कन्या बेलजियम जैसे दूर देश से आती है, सर्वोदय का काम क्या हो रहा है, यह देखने के लिए। और प्रेम से दान देकर जाती है। प्रेम का उत्तम चित्र मैं कल देख चुका।

दुनिया भर में भले लोग हैं और वे भले लोग सारे एक हैं। भले भारत में चन्द लोग दीखते हों, लेकिन भले लोगों की संख्या कम नहीं है। भले लोग दुनिया में अनन्त हैं। अनन्त हो गये पहले और अनन्त होंगे आगे। भगवान की हम पर कितनी कृपा है यह कहने के लिए आज के दिन के निमित्त मैंने यह बात आपके सामने रखी। आपने यहाँ काम पूर्ण करने का वचन दिया है। काम तो आप ही करते हैं, मैं तो कुछ नहीं करता। और आप भी क्या काम करते हैं? काम तो भगवान करता है। हम सब निमित्त हैं। उस भगवान की शरण में जाकर मैं समाप्त करता हूँ।

पटना में २५-१२-'६८ को दिया गया प्रवचन।

मध्यावधि चुनाव में मतदाता-शिक्षण के लिए फोल्डर और पोस्टर तैयार है। अपने क्षेत्र में प्रचार के लिए सर्व सेवा संघ प्रकाशन को लिखकर शीघ्र मँगाइए।

www.vinoba.in

१५ वाँ राजस्थान सर्वोदय-सम्मेलन

प्रदेशदान के संकल्प का व्यापक समर्थन

गत ३०-३१ दिसम्बर '६८ को जयपुर में १५ वाँ प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन गांधी-जन्म-शताब्दी के इस वर्ष में राजस्थान के समस्त गाँवों में ग्रामदान का विचार पहुँचाकर उसके लिए सहमति प्राप्त करने तथा प्रदेशदान के काम को पूरा करने के लिए अपनी अधिक-से-अधिक शक्ति लगाने के सामूहिक संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता की थी जयप्रकाश नारायण ने।

सर्वोदय-सम्मेलन का शुभारम्भ करते समय श्री जयप्रकाश नारायण ने राजस्थान के साथ के अपने आत्मीय लगाव की चर्चा करते हुए राजस्थान के दुष्काल की चर्चा की, और दुष्काल-पीड़ितों के साथ अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रकट की।

ग्रामदान से प्रदेशदान तक की मंजिल पूरी करने के लिए कार्यकर्ता और नागरिक-शक्ति का आह्वान करते हुए आपने कहा कि प्रदेश एक राजनीतिक इकाई है, इसलिए बुनियादी राजनीतिक परिवर्तन के लिए छिट-पुट ग्रामदान से काम नहीं चलनेवाला है, इसके लिए प्रदेश भर के गाँवों का ग्रामदान होना चाहिए।

सत्ता के विकेन्द्रीकरण के औचित्य पर अपना मत व्यक्त करते हुए श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि किसी भी राजनीतिक रचना की बुनियाद जबतक मजबूत नहीं होती, तबतक वह रचना पक्की नहीं हो सकती। आज भारत को सैनिक या साम्यवादी तानाशाही के खतरे से मुक्त करने का एक ही मार्ग है कि ग्राम-स्वराज्य की स्थापना द्वारा केन्द्रित शक्ति का विकेन्द्रीकरण हो।

सर्वोदय-सम्मेलन के दूसरे दिन की बैठक में यहाँ प्रदेशदान के संकल्प के बहुविध पहलुओं पर विचार-विमर्श हुआ। इस बैठक में श्री सिद्धराज ढड्ढा ने कहा कि देश की वर्तमान परिस्थिति का यह तकाजा है कि हम गांधीजी की कल्पना के ग्रामस्वराज्य की स्थापना के काम में जुट जायँ। आपने कार्यकर्ताओं से अपील की कि शंका छोड़कर निष्ठा के साथ हम अपने को प्रदेशदान के लिए समर्पित करें।

श्री गोकुलभाई भट्ट ने कहा कि समाज के निर्माण में ग्रामदान का महत्त्वपूर्ण, बुनियादी स्थान है। भारत गाँवों का देश है और गाँवों की मजबूती पर देश की मजबूती निर्भर करती है। आपने गांधी-शताब्दी-वर्ष में ठोस काम करने की प्रेरणा कार्यकर्ताओं को दी।

श्री पूर्णचन्द्र जैन ने सम्मेलन का निवेदन रखते हुए कहा कि भारत की दृष्टि से ही नहीं, जगत् की परिस्थितियों में भी ग्राम-स्वराज्य की महत्ता स्पष्ट है।

प्रातःकाल शान्ति-सैनिकों की रैली हुई। इस रैली को सम्बोधित करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि आज के हिंसा और संघर्ष के वातावरण में शान्ति के काम की विशेष आवश्यकता है। हमारी संख्या यद्यपि थोड़ी है, परन्तु ग्राम-स्वराज्य के लिए नयी पीढ़ी को तैयार करना होगा।

ता० ३१ दिसम्बर को ही सायं सचिवालय के सभाकक्ष में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया की अध्यक्षता में राजस्थान गांधी-जन्म-शताब्दी समिति ने अपनी विशेष बैठक में ग्राम-स्वराज्य के लिए प्रदेशदान के कार्यक्रम का समर्थन किया है। समिति ने सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव में प्रदेश की समस्त रचनात्मक संस्थाओं और स्वायत्त-संस्थाओं तथा जनता से इस आन्दोलन में सहयोग करने का आह्वान किया। प्रस्ताव में आगे कहा गया है कि राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति द्वारा आयोजित सेवा-ग्राम-समिति में स्वीकृत नौसूत्री कार्यक्रम के प्रकाश में राजस्थान प्रदेश की शताब्दी-समिति ने अपना सप्तसूत्री कार्यक्रम तय किया है, जिस पर हम सबको इस वर्ष दुष्काल की विषम स्थिति के बावजूद भी तत्परतापूर्वक लगना है। हमारा यह विश्वास है कि इन कार्यक्रमों की सफलता समग्र दृष्टि, जागृत जन-शक्ति, स्वतंत्र अभिक्रम के समन्वित प्रयत्न पर ही निर्भर है और इनको हमारे सप्तसूत्री कार्यक्रम का प्रथम सूत्र 'ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य' का ऊँचा लक्ष्य ही प्रेरित कर सकता है। इस अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि गांधीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि उनके आदर्शों को क्रियान्वित करना ही है। ग्रामस्वराज्य की स्थापना उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने का उत्तम तरीका है। उन्होंने कहा कि राजनैतिक आजादी के बाद आर्थिक विषमता और सामाजिक असमानता को दूर करने का काम हमारे सामने है। गांधीजी समाज में प्रचलित मूल्यों में क्रान्ति लाना चाहते थे। —विशेष संवाददाता द्वारा

राजस्थान का प्रथम प्रखण्डदान

नीमकाथाना

जयपुर : सीकर जिले के नीमकाथाना क्षेत्र का ग्रामदान यहाँ आयोजित प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर श्री जयप्रकाश नारायण को समर्पित किया गया। राजस्थान का यह पहला प्रखण्डदान है। नीमकाथाना पंचायत समिति में कोई १२२ गाँव हैं, जिनमें से लगभग १०० गाँवों के लोगों ने ग्रामदान का संकल्प लिया है। ग्रामवासियों ने ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य स्थापित करने का निश्चय किया है।

उल्लेखनीय है कि ग्रामदान के बाद गाँव में ग्रामसभा बनायी जाती है, जो सर्वसम्मति से ग्राम-निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहती है। ग्रामवासी मिलकर ग्रामकोष बनाते हैं। बीस प्रतिशत या ग्रामसभा की अनुमति से अधिक जमीन भूमिहीनों के लिए प्रदान की जाती है।

नीमकाथाना क्षेत्रीय खादी-समिति के मंत्री श्री ज्ञानचन्द मोदी ने एक भेंट में बताया कि ग्रामदानी गाँवों में निर्माण की योजना भी बनायी गयी है।

'शांति-दिवस' बिल्ले

आगामी ३० जनवरी को 'शांति-दिवस' के अवसर पर बिक्री के लिए, वी० पी० से, या मनीआर्डर से रकम भेजकर 'शांति-दिवस बिल्ले मँगाइए।

दर : ७५ रु० प्रति हजार

प्राप्ति-स्थान

अ० भा० शांति-सेना मण्डल

राजघाट, वाराणसी-१

राजस्थान ग्रामदान-अभियान : प्रदेशदान की योजना

प्रथम चरण : जनवरी से मार्च, १९६९

अगले तीन महीने में प्रांत के कुछ चुने हुए क्षेत्रों में प्रदेशदान की पूर्वतैयारी के निमित्त कम-से-कम तीन सघन ग्रामदान-अभियान आयोजित किये जायें। इन अभियानों के दो मुख्य उद्देश्य होंगे :

• प्रदेश के चुने हुए १००-१५० कार्यकर्ताओं को प्रत्यक्ष कार्य द्वारा ग्रामदान-प्राप्ति के काम का अनुभव देना, ताकि वे आगे प्रदेशदान के काम का संचालन कर सकें।

• अधिक-से-अधिक ग्रामदानों की प्राप्ति, जिससे कार्यकर्ताओं में आत्म-विश्वास और उत्साह जगे।

इन अभियानों के प्रत्यक्ष अनुभव से आगे प्रदेशदान की पूरी योजना बनाना ज्यादा आसान होगा।

अभियानों की रूपरेखा

प्रदेशदान के आवाहन के बाद अभी दिसम्बर ९ से १५ तक नीमकाथाना में डा० धर्मानिधि पटनायक के मार्गदर्शन में पहला सघन ग्रामदान-अभियान आयोजित किया गया। इस अभियान में करीब ६० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था, जिनमें उत्तर प्रदेश तथा पंजाब के कार्यकर्ता भी शामिल थे। इस अभियान की अवधि करीब ४० ग्रामदान प्राप्त हुए। इन गाँवों में तीन-चार हजार की आबादी के गाँव भी हैं।

अभियान का अनुभव उत्साहप्रद रहा। अब प्रस्तावित तीन अभियान इस अनुभव के आधार पर आयोजित किये जा रहे हैं। डा० पटनायक ने इन तीनों अभियानों में भी उपस्थित रहने का आश्वासन दिया है। इन अभियानों की रूपरेखा इस प्रकार होगी :

• अभियान की अवधि पूरे ७ दिन की रहेगी।

• प्रदेशभर से चुने हुए १००-१५० कार्यकर्ताओं के अलावा स्थानीय शिक्षक, पंच-सरपंच, आदि कुल मिलाकर २००-२५० कार्यकर्ता हर अभियान में शरीक होंगे।

• आन्तर-प्रान्तीय सहयोग की दृष्टि से पड़ोसी प्रांत, जैसे—उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि के भी कुछ कार्यकर्ताओं को अभियान में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित किया जायगा।

• शुरू में दो दिन इन सब कार्यकर्ताओं का शिविर होगा, बाद में ५ दिन तक दो-दो, तीन-तीन की टोलियाँ बनाकर कार्यकर्ता आस-पास के क्षेत्रों में पदयात्रा द्वारा ग्रामदान-प्राप्ति का काम करेंगे। अभियान के अन्त में टोलियाँ अपने-अपने काम की रिपोर्ट केन्द्र-स्थान पर देकर विसर्जित की जायेंगी।

• प्रारम्भिक शिविर के बाद अभियान के दिनों में क्षेत्र के केन्द्र-स्थान से दो छोटे-छोटे दल निरन्तर क्षेत्र में घूमते रहेंगे। एक दल का काम जगह-जगह पदयात्रा-टोलियों से सम्पर्क रखने का, उनकी कठिनाइयों को दूर करने का, और मदद पहुँचाने का होगा। दूसरा दल क्षेत्र में बराबर घूमकर स्कूलों, कालेजों, शिक्षित समूहों, आदि में विचार-प्रचार और वातावरण बनाने का काम करेगा।

क्षेत्रों की छाँट

इन अभियानों के लिए ऐसे क्षेत्र चुने जायँ, जहाँ अधिक-से-अधिक ग्रामदान प्राप्त होने की सम्भावना हो। यह जरूरी नहीं है कि क्षेत्र कोई प्रशासनिक इकाई हो। इस दृष्टि से क्षेत्रों के चुनाव में नीचे लिखी बातें ध्यान में रखी जायँगी।

• क्षेत्र में ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति का नेतृत्व हो, जो सामान्य तौर पर सभी वर्गों के आदर का पात्र हो, विवाद का विषय न हो और अभियान के संचालन में जिसका पूरा सहयोग हो।

• क्षेत्र के शिक्षकों तथा पंच-सरपंचों के सहयोग की सम्भावना बनी हो। इनमें से कम-से-कम कुछ अभियान में योग देने को तैयार हों।

• यथासम्भव बड़े नगरों से दूर का क्षेत्र हो।

पूर्वतैयारी

• अभियान के आठ-दस दिन पहले से क्षेत्र में सम्पर्क तथा वातावरण-निर्माण का व क्षेत्र के गाँवों की परिस्थिति, यहाँ के स्थानीय नेतृत्व आदि की जानकारी प्राप्त करने का काम किया जाय।

• सम्भव हो तो ग्रामदान-अभियान के समर्थन में क्षेत्र के सभी वर्गों, पक्षों आदि के प्रमुख लोगों के हस्ताक्षर से अपील निकाली जाय।

• अभियान के दो या तीन दिन पहले डा० पटनायक क्षेत्र में पहुँच जायेंगे। उनकी उपस्थिति में क्षेत्र के तमाम शिक्षकों, पंच-सरपंचों, आदि की अलग-अलग मीटिंगें आयोजित की जायँ।

• प्रचार पोस्टर-पंचों आदि के द्वारा करने की बजाय सामान्यतः मौखिक ही हो तो ज्यादा अच्छा।

कुछ आवश्यक तैयारियाँ

• प्रदेशभर से १०० से १५० ऐसे कार्यकर्ताओं की छाँटकर ली जाय जो प्रथम चरण के इन तीनों अभियानों में शरीक हों। इन अभियानों में कार्यकर्ता बदलते रहने से उन्हें काम का परिपक्व अनुभव नहीं हो सकेगा।

• प्रान्तीय स्तर पर शिक्षा-विभाग द्वारा तथा अन्य सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा परिपत्र निकलवाकर शिक्षकों को यह प्रेरणा तथा अनुमति दी जाय कि वे ग्रामदान-अभियान में पूरा सहयोग दें।

• शिक्षा-विभाग आदि से यथासम्भव यह बात भी मान्य करायी जाय कि ग्रामदान-अभियान में काम करना 'समाज-प्रशिक्षण' का, अतः उनके काम का अंग माना जाय। ग्रामदान-अभियान में शामिल होनेवाले शिक्षक 'काम पर हैं', ऐसा माना जाय।

• इसी प्रकार पंचों-सरपंचों आदि के सहयोग के लिए सरकार के सम्बन्धित विभाग या अन्य अधिकारियों द्वारा परिपत्र निकलवाये जायँ।

• पदयात्रा के दौरान जब किसी गाँव में ग्रामदान के लिए आवश्यक हस्ताक्षर हो जायँ तो गाँव में सभा करके उसमें ग्रामदान की घोषणा की जाय और हस्ताक्षर आदि की आवश्यक जानकारी दी जाय।•

सम्पादक के नाम पत्र

www.vinoba.in

श्रीयुत् सम्पादकजी, 'भूदान-यज्ञ'

वैसे तो 'भूदान' सर्वोदय-आन्दोलन की बुनियाद है। किन्तु इससे भी बढ़कर एक विराट और सम्पूर्ण क्रान्ति-स्वरूप "ग्रामदान" प्रगट हुआ है। स्वयं विनोबाजी इसे एक 'अवतार' एवं 'दुनिया के इतिहास में अद्भुत घटना' मानते हैं।

अवश्य ही 'भूदान' की तुलना में 'ग्रामदान' सर्वशक्ति-सम्पन्न तथा ओजपूर्ण जन-क्रान्ति है। जहाँ ग्रामदान एक विशाल वृक्ष है वहाँ भूदान उसकी एक डाल है। भूदान एक पहलू का, ग्रामदान जीवन के तमाम पहलुओं का समाधान करता है। संक्षेप में, ग्रामदान साध्य है और भूदान साधन का एक अंग।

तो मेरा सुझाव है कि आनेवाले नये साल (सन् ६९) से अथवा बापू की पुण्यतिथि से 'भूदान-यज्ञ' पत्रिका का नाम बदलकर 'ग्रामदान महायज्ञ' अथवा कोई माफिक नाम कर दिया जाय, जिससे लोकमानस पर इसका आकर्षण बढ़े। आशा है, सम्बद्ध अधिकारी इस ओर ध्यान देंगे। आपका,

ईसा-जयन्ती — जंगबहादुर भाई
२५-१२-'६८ — ग्राम-स्वराज्य संघ, मुंगेर

[प्रस्तुत पत्र के संदर्भ में हम अपने पाठकों, कार्यकर्ता साथियों की सम्मति और सुझाव आमंत्रित करते हैं।—सं०]

विनोबाजी का कार्यक्रम

१५ जनवरी तक : बिहारशरीफ
१६ से २३ जनवरी : बाढ़
२४ से २६ जनवरी : पटना जिले में ही (पड़ाव अनिश्चित)
२७ से २९ जनवरी : मुंगेर
३० जनवरी : भागलपुर में प्रवेश

पते : १. विनोबा-निवास
मार्फत : बि० खा० ग्रा० संघ
बिहारशरीफ, पटना

२. बाढ़, पटना

३. मुंगेर

सन् १९६९ गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष है !

गांधीजी ने कहा था :

"मेरा सर्वोच्च सम्मान जो मेरे मित्र कर सकते हैं, वह यही है कि मेरा वह कार्यक्रम वे अपने जीवन में उतारें, जिसके लिए मैं सदैव जिया हूँ या फिर यदि उन्हें उसमें विश्वास नहीं है तो मुझे उससे विमुख होने के लिए विवश करें।"

मानव-समाज के सामने, आज के संघर्षपूर्ण एवं हिंसामय वातावरण से मुक्ति पाने के लिए, गांधी-मार्ग ही आशा का एकमात्र मार्ग रह गया है।

गांधीजी की दृष्टि में :

(१) दुनिया के सब धर्म एक जगह पहुँचने के अलग-अलग रास्ते हैं।
(२) जाति और प्रान्त की दोहरी दीवार टूटनी चाहिए।
(३) अछूत प्रथा हिन्दू समाज का सबसे बड़ा कलंक है।
(४) यदि किसी व्यक्ति के पास, जितना उसे मिलना चाहिए उससे अधिक हो तो वह उसका संरक्षक या ट्रस्टी है।
(५) किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।
(६) स्वराज्य का अर्थ है अपने को काबू में रखना जानना।
(७) प्रत्येक को सन्तुलित भोजन, रहने का मकान और दवा-दारू की काफी मदद मिल जानी चाहिए, यह है आर्थिक समानता का चित्र।

पूज्य बापू की जीवन-दृष्टि में अपनी दृष्टि विलीन कर गांधी-जन्म-शताब्दी सफलतापूर्वक मनाइए।

राष्ट्रीय-गांधी-जन्म शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, दुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर–३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

आन्दोलन के समाचार

गया जिले का जिलादान घोषित

श्री भागवत मिश्र जिला शिक्षा-पदाधिकारी ने १५-१०-'६८ की बैठक में पूरे शिक्षक समाज को इस अभियान की जिम्मेवारी उठा लेने के लिए प्रेरित करते हुए गया का जिलादान पूरा कराने में बड़ा महत्त्वपूर्ण हाथ बँटाया है। राजनीतिक पक्षों के साथी, सरकारी सेवक, ग्रामपंचायतें और रचनात्मक संस्थाएँ भी अभियान में अनुकूल होकर जुटे थे। सबकी कोशिश के फलस्वरूप १ जनवरी '६९ को गया जिलादान की घोषणा हुई।

गया जिलादान के आँकड़े

अनुमंडल	प्रखंड	कुल गाँव	शामिल गाँव	जन-संख्या	शामिल जन-संख्या
नया सबर :	१८	२६३०	२२५३	१२,१८,७५१	९,३३,३१३
नवादा :	१०	९६७	११५८	७,००,९३९	५,५४,६९९
औरंगाबाद :	११	१७६६	१५४७	८,०३,५१५	६,१२,४१५
जहानाबाद :	७	८७३	८८७	६,५९,५८९	५,०२,४८४
कुल :	४६	६,२३६	५,८४५	३३,८२,७९४	२६,०२,९११

शाहाबाद जिलादान के मार्ग पर

शाहाबाद जिले में विनोबाजी की यात्रा के दरम्यान वहाँ के ग्रामदान-प्राप्ति समिति और जिला सर्वोदय-मण्डल आदि ने जिलादान और एक लाख रुपये की थैली समर्पण करने का तय किया था। वहाँ के समाहर्ता ने जिलादान के काम में सरकारी सेवकों का सक्रिय सहयोग देने के लिए एक परिपत्र निकाला और जिलादान के लिए जिले के निवासियों से एक अपील भी निकाली थी। जिले के सब पक्षों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की ओर से भी अपीलें प्रकाशित हुईं। उससे वातावरण बनने में मदद मिली। विनोबा के निवास-काल में वहाँ भगवानपुर, कुदरा और सासाराम, तीन नये प्रखंडदान पूरे हुए और कुल मिलाकर करीब ५,००० रु० की थैली समर्पित हुई। आरा से रवाना होने के पूर्व शाहाबाद जिला पंचायत परिषद की ओर से भी गत १८ दिसम्बर को बैठक बुलायी गयी और उन्होंने नीचे अनुसार निर्णय किये।

"श्री शंभूशरण उपाध्याय की अध्यक्षता में जिला पंचायत परिषद की बैठक हुई, जिसमें सर्वसम्मति से तय हुआ कि २६ जनवरी '६९ तक इस जिले का ग्रामदान सम्पन्न हो जाय तथा प्रत्येक पंचायत से दो-दो सौ रुपया इकट्ठा कर श्री विनोबाजी को थैली भी उसी दिन समर्पित की जायेगी। इस काम की जिम्मेदारी प्रत्येक प्रखंड पंचायत परिषद के सभापति एवं मंत्री लेंगे तथा जिला एवं प्रखंड पंचायत के परिषद-पदाधिकारी जिलादान पूरा होने तक इस काम को ही अपना प्रमुख काम समझकर अपना पूरा समय इस काम के लिए देंगे।"

इस अवसर पर बिहार राज्य पंचायत परिषद के मंत्री श्री बिहारी प्रसाद तथा राज्य पंचायत परिषद के ग्रामदान प्रभारी श्री रत्नेश्वर प्रसाद सिंह भी उपस्थित थे।

पू० विनोबाजी का कहना है कि यहाँ की पंचायत परिषद २६ जनवरी '६९ तक जिले के सारे प्रखण्डों का दान करवा लेती है तो एक उदाहरण पेश होगा, जो अन्य जिलों और पंचायतों के लिए अनुकरणीय होगा।

वहाँ के जिला सर्वोदय मंडल, प्राप्ति-समिति, बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ, जिला कांग्रेस कमिटी आदि के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भी पू० बाबा को आश्वासन दिया है कि २६ जनवरी तक जिलादान के संकल्प को अवश्य पूर्ण करेंगे। —कृष्णराज

उत्तर प्रदेशदान की ओर

गाजीपुर से श्री रामयज्ञ भाई द्वारा समाचार मिला है कि सैदपुर, सादात और जखनियाँ का प्रखण्डदान हो गया है। तीनों प्रखण्डों में कुल ३४२ ग्रामदान हुए। दिसम्बर में चलाये गये ग्रामदान-अभियान की निष्पत्ति-स्वरूप मुरादाबाद जिले में श्री गांधी आश्रम द्वारा चलाये गये अभियान में १४३ ग्रामदान हुए। मैनपुरी में ३००, फर्रुखाबाद में १४४, फैजाबाद में १९६, देवरिया में ११५, मीरजापुर में १६, वाराणसी में ३८६ ग्रामदान हुए। इस प्रकार ३१ दिसम्बर '६८ तक प्रदेश के ३८ जिलों में कुल १२,१५२ ग्रामदान एवं ७४ प्रखण्डदान हुए।

जनवरी में एटा, मथुरा, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बुलन्दशहर, मैनपुरी, गाजीपुर, आजमगढ़ और झाँसी में अभियान चलेंगे। हिमपात के कारण उत्तराखण्ड के अभियानों में कुछ व्यवधान पड़ने की संभावना है, किन्तु १५ फरवरी से तो सब जगह तीव्रता से अभियान शुरू हो जायेंगे।

अभी २०-२१ दिसम्बर को इलाहाबाद में विनोबाजी थे। उस समय स्वर्गीय राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन की आदमकद कांस्य-प्रतिमा का अनावरण, विश्वविद्यालय शांति-सेना का शुभारम्भ, रचनात्मक कार्यकर्ताओं एवं उत्तर प्रदेश ग्रामदान-प्राप्ति समिति की अभियान संचालन-समिति के सदस्यों का बाबा से प्रेरणा-ग्रहण आदि कार्यक्रम रहे। आचार्यकुल की एक मीटिंग भी हुई, जिसमें कविवर सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा ने भी भाग लिया और स्वेच्छा से योगदान देने को कहा है। —कपिलभाई, संयोजक, उ० प्र० ग्रामदान-प्राप्ति समिति

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

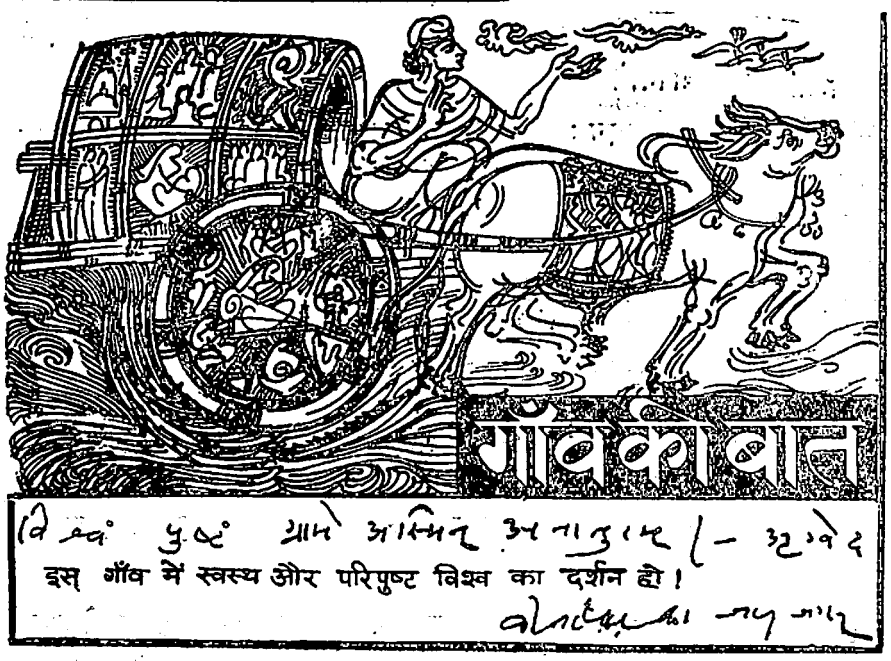

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् । – ऋग्वेद
इस गाँव में स्वस्थ और परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो !

इस अंक में

ये सब चीजें मेरे काम की हैं…
दल-बदलू कौन है ?
मन की मैल धुल गयी, आसमान साफ हो गया !
जब वर्षों के द्वेष मिट गये !
राजनीति से संन्यास
'बाबा गरीबों का देवता है'
करुणा की मूर्ति गांधी
नम्रता ने ही चकमा दिया
चन्द्र की खोज

१३ जनवरी, '६९
वर्ष ३, अंक ११] [१८ पैसे

ये सब चीजें मेरे काम की हैं, इन्हें लड़ाई का चिन्ह किसने बनाया ?

मेरी एक छोटी-सी झोपड़ी है। उसके सामने बरगद का पेड़ है। मैं सुबह सूरज निकलते-निकलते खेत में पहुंच जाता हूं, और शाम को जब अंधेरा होने लगता है तो दीया जलाकर घर में उजाला कर देता हूं। मेरी बैलों की जोड़ी कितनी अच्छी है ! ये बैल न हों, और यह हल न हो तो खेत कैसे जोता जाय ? समय से खेत की जोताई हो और बोआई हो, तो बीज उगें, पौदे बड़े हों, और हर पौदे में खूब गेहूं की बालें आयें। अब अनाज पक जाये तो हंसिया लाऊं, साथियों को बुलाऊं, सब मिलकर खेत काटें, और अनाज को खलिहान में इकट्ठा कर दें। खलिहान को देखकर कितनी खुशी हो !

ये सब चीजें मेरे पास हों, तो खेती खूब अच्छी हो। लेकिन खेती चाहे जितनी अच्छी हो, और अनाज चाहे जितना पैदा हो, खेती के साथ चलनेवाले धंधों के बिना काम नहीं चलेगा। ग्रामोद्योग का पहिया गांव-गांव, घर-घर चलना ही चाहिए। खेती और उद्योग को मिलाकर उत्पादन का चक्र पूरा होगा, और घर लक्ष्मी से भर जायगा।

इन चुनाव लड़नेवालों ने अपने-अपने लिए जिन चीजों के चुनाव-चिन्ह बनाये हैं वे सब मेरे काम की हैं। हमारे नेता इन अच्छी चीजों को इकट्ठा कर मुझे क्यों नहीं देते ? कैसी बात है कि जो चीजें खुशहाली बढ़ानेवाली हैं, वे लड़ाई का चिन्ह बन गयी हैं। भला झोपड़ी और बैल, बरगद और गेहूं, गेहूं और हंसिया, या खेती और उद्योग में कोई लड़ाई हो सकती है ? बात यह है कि जीवन में जो चीजें मिलकर रहती हैं वे राजनीति में एक-दूसरे से अलग हो जाती हैं। उसी तरह राजनीति पड़ोसियों को भी एक-दूसरे का दुश्मन बना देती है। लोगों को जोड़ने की जगह तोड़ देती है।

ग्रामदान दिलों को जोड़ता है। कहता है कि गांव एक है। उसकी एकता में ही उसकी शक्ति है। चुनाव के कारण, या और किसी भी कारण, उसकी एकता टूटने नहीं देनी चाहिए। →

www.vinoba.in

दल-बदलू कौन है ?

प्रश्न : किसको वोट न दें, यह बताते हुए आप लोगों ने कहा है कि गलत उम्मीदवार की एक पहचान यह भी है कि वह दल-बदलू है। बात ठीक है, क्योंकि दल-बदलू की बात का एतबार क्या है ? जिस आदमी की बात और ईमान का एतबार न हो, उसके हाथ में सरकार कैसे सौंपी जायगी ? लेकिन यह तो बताइए कि दल-बदलू माना किसे जाय ? अभी चुनाव में जो उम्मीदवार खड़े हैं, उनमें अनेक ऐसे हैं जो अपना पहला दल छोड़कर दूसरे दल में शरीक हुए हैं। एक तरह से कई पूरी पार्टियाँ ही ऐसी हैं, जिसके लोग—कम-से-कम सब मुख्य लोग—पहले कांग्रेस में थे। क्या ये सब दल-बदलू माने जायेंगे ?

उत्तर : आपने बहुत अच्छी बात उठायी है। इस बात को अच्छी तरह समझ लेने की जरूरत है कि क्यों दल-बदल एक बड़ा दोष माना गया है, और क्यों मतदाताओं को वोट देने के लिए अच्छे उम्मीदवार की पसन्द करते समय दल-बदल का ध्यान रखना चाहिए।

एक पार्टी को छोड़कर दूसरी पार्टी में चला जाना, या दूसरी नयी पार्टी बना लेना अपने में बुरा नहीं है। ऐसा करना गलत भी नहीं है। हमारे देश में विचार की स्वतंत्रता है। जिसे जो विचार अच्छा लगे उसे माने, जो दल अच्छा लगे उसमें शरीक हो, या किसी भी दल में शरीक न हो और 'स्वतंत्र' रहे। जो आदमी अपना दिमाग खुला रखता है, जो सचाई के साथ चलने की कोशिश करता है, वह बदलता रहता है, बढ़ता रहता है। वह किसी दल के साथ रहने के लिए सचाई को—जिसे उसकी आत्मा सचाई मानती हो—नहीं छोड़ता। ऐसे सच्चे आदमी को दल-बदलू नहीं कहेंगे। वह भले ही एक पार्टी छोड़े, और दूसरी पार्टी में जाये, या साथियों के साथ मिलकर एक नयी पार्टी बनाये, लेकिन वह जो कुछ करेगा खुलकर करेगा, वह अपने विचारों के बारे में जनता को अन्धेरे में नहीं रखेगा।

लेकिन आप उस आदमी को क्या कहेंगे, जो एक पार्टी से तो चुनाव लड़े, लेकिन चुनाव के बाद जब सरकार बनाने की बात हो तो सरकार में पद पाने की लालच से एक पार्टी को छोड़कर दूसरी में, और दूसरी को छोड़कर तीसरी में चला जाय ? क्या ऐसे आदमी के लिए भी आप कहेंगे कि उसने ईमानदारी से अपना विचार बदल दिया है ?

प्रश्न : नहीं, ऐसे आदमी को तो पद का लोभी ही मानना पड़ेगा। दूसरा क्या माना जाय ?

उत्तर : बस, ऐसे ही लोभी और बेएतबार आदमी को दल-बदलू कहते हैं।

प्रश्न : यानी वह आदमी दल-बदलू है, जो चुनाव हो जाने के बाद पद के लोभ से अपना दल बदलता है। क्यों ?

उत्तर : बिलकुल ठीक। जो चुनाव के पहले दल-बदलकर जनता के सामने जाता है; और अपनी बात सचाई के साथ रखकर जनता का वोट माँगता है वह दल-बदलू नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न : और वह आदमी क्या है जिसने पिछले चुनाव के बाद सरकार में जाने के लिए दल बदला, नया दल बनाया, और अब अपने नये दल की ओर से चुनाव लड़ रहा है ?

उत्तर : आप खुद सोचें। आपने इतने दिनों तक उसका काम देखा। अगर आपको संतोष हो गया हो तो आप उसे वोट दे सकते हैं, बशर्ते उसमें दूसरे गुण भरपूर हों, और यदि संतोष न हुआ हो तो वोट न दें। कौन उम्मीदवार अच्छा है, और कौन बुरा, यह अपने विवेक से पूछिए। लेकिन विवेक सही काम तभी करेगा जब दिल से दल निकल जायगा, और जाति निकल जायगी। जिसके हृदय से यह दुहरा विष निकल जायेगा उसकी आत्मा उसे सही रास्ता जरूर दिखायेगी। •

→अगर एकता टूट जायेगी तो गाँव का पूरा जीवन टूट जायेगा। गाँव को नहीं, राजनीति को तोड़ना चाहिए। और, राजनीति तब टूटेगी जब हमारे दिलों से सारे दल निकल जायेंगे, जिन्होंने इन अच्छी चीजों को शान्ति और सुख का नहीं, बल्कि द्वेष और संघर्ष का चिन्ह बना डाला है।•

मैं गाँववालों से कहता हूँ कि तुम्हारे हाथ में ही सब कुछ है। तुम्हारा भविष्य तुम्हारे ही हाथ में है। आज की राजनीति मर चुकी है। इससे तुम्हारा हित नहीं होगा।

राजनीतिक पार्टियाँ वोटरों से कहती हैं कि तुम्हारा भाग्य हमारे हाथ में है। हमें वोट दो, हम तुम्हें स्वर्ग दिला देंगे। स्वर्ग में क्या-क्या मिलेगा, यह हमने अपने 'मेनिफेस्टो' (घोषणा-पत्र) में बताया है। दूसरी ओर कोई पार्टी नहीं जो तुम्हारे लिए स्वर्ग दिला सके। स्वर्ग-नरक तुम्हारे हाथ में है, यह कोई पार्टी लोगों को नहीं समझाती।

पटना, २५-१२-'६८

—विनोबा

www...

मन की मैल धुल गयी आसमान साफ़ हो गया !

हरिकिशुन ने नारद-मोह के लिए रुपयोंवाली जिस माया-पुरी की रचना की थी, वह भेद खुलते ही खत्म हो गयी। मोह का पर्दा फटते ही गांव के कई लोगों में हरिकिशुन के खिलाफ रोष पैदा हो गया। खुद बटेसर सहित हरिजन-टोले के लोगों के मन में यह शंका समा गयी कि जरूर ही हरिकिशुन ने खुद अध्यक्ष बनने के लिए यह चाल चली थी। कई युवक तो एक-साथ हरिकिशुन पर उबल पड़े, "कभी तो नेकनीयत बनने की कोशिश किया करो हरिकिशुन, मन्दिर में भी मन के अन्दर का कूड़ा लिये जाते हो? राम... राम, कम-से-कम गांव के इन पांच-दस बूढ़े-बुजुर्गों का तो खयाल किया होता कि कितनी मगज-पच्ची करने के बाद तो इन लोगों के चलते गांव में सुमति दाखिल हुई है, अब तुम अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए उसे खत्म करने पर उतारू हो गये?... तुम्हें शर्म आनी चाहिए हरिकिशुन, और अब अच्छी तरह समझ लो, गांव की एकता को तोड़ने के लिए फिर कभी ऐसी चाल चली तो टांगें...!" एक युवक क्रोधित हो गया था।... शायद उसको बारात से लौटते समय की बात और हवालात की दुर्दशा याद हो आयी थी।

"चुप रहो रामलखन, बीती बात का बतंगड़ नहीं बनाते, जो बीत गया सो बीत गया, आगे की बात सोचो।" हरिहर काका ने कुछ डांटती हुई आवाज में कहा।

हरिकिशुन सहम गया था। सिर उठाकर किसीसे आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। जिन्दगी के चालीस साल बीत गये यही सब करते, लेकिन उसने कभी मात नहीं खायी; सबको पछाड़ता रहा, लेकिन आज न जाने क्यों, उनके दिल में उसीके मन की दुर्जनता कांटा चुभो रही थी। शायद पहली बार बहुत सारे सज्जन लोगों का एकसाथ सामना करना पड़ा था उसे। अकेले-अकेले तो लगभग गांव के हर आदमी से वह कभी-न-कभी निपट चुका है। शायद दुर्जनता की यही सबसे बड़ी दुर्बलता है कि वह कभी भी संगठित सज्जनता का सामना नहीं कर सकती। यह दूसरी बात है कि सज्जनता का संगठित होना आसान नहीं है। सज्जन लोग या तो सार्वजनिक मामलों में चुप रहते हैं, या छिट-पुट कुछ करते भी हैं तो उसका कोई स्थायी असर नहीं होता, जबकि दुर्जन लोग अक्सर संगठित होते हैं, इसलिए दुर्जनता ताकतवर पड़ जाती है।

"क्यों न हरिकिशुन को ही ग्रामसभा का अध्यक्ष चुना जाय? अगर इनके दिल में गांव के लोगों की सेवा करने का उत्साह पैदा हुआ है तो हमें इनको मौका देना चाहिए।" रामघनी बाबू ने सुझाव दिया।

"हर्गिज नहीं, हम अपनी बात वापस लेते हैं। हरिकिशुन बाबू का मन साफ नहीं है।" अध्यक्ष के लिए हरिकिशुन का नाम पेश करनेवाले बटेसर ने ही जोर देकर कहा।

"मन तो 'पंचपरमेसर' की सेवा से ही साफ होता है बटेसर, हरिकिशुन को मौका देना चाहिए!" हरिहर काका ने रामघनी बाबू की मंशा समझकर उनकी बातों का समर्थन किया।

"लेकिन जब सेवा के नाम पर मेवा खाने के लिए जीभ से लार टपक रही हो तो?" रामप्यारे सिंह ने कहा।

"बार-बार गड़ा मुर्दा क्यों उखाड़ते हो रामप्यारे? एक बार जब कह दिया गया कि जो बीती, उसे भूलकर आगे की बात सोचनी है तो फिर वही प्रपंच शुरू कर दिया?" विश्वनाथ राय ने डांटते हुए कहा।

"आपकी क्या राय है ठाकुर?" मनसुख ने धीरे से पूछा।

"मेरी भी राय है कि हरिकिशुन को ही मौका देना चाहिए। आखिर, काम जब गांव के सब लोगों की राय से ही होगा, तो डर किस बात का? जिम्मेदारी डालने और विश्वास करने से आदमी बदलता भी है।" ठाकुर विश्वनाथ राय ने कहा।

"मैं हाथ जोड़कर आप लोगों से प्रार्थना करता हूं कि अब और मुझे लज्जित न करें। मैं अभी इस काबिल नहीं कि सबकी भलाई की बात सोच सकूं। मेरा मन बहुत कमजोर है। जो कुछ हो सकेगा मैं वैसे ही करूंगा, लेकिन अध्यक्ष आप लोग किसी और को ही बनायें।" इतनी देर बाद हरिकिशुन सिर उठाकर बोल सका। उसकी आवाज भारी थी। चेहरे से कुछ परेशानी झलक रही थी।

"तो फिर, हरिहर काका को ही!..." बटेसर ने कहा।

"हां... हां, यही उचित है।" एकसाथ कई लोगों ने कहा।

"लेकिन मुझसे अब इस बुढ़ापे में यह भार नहीं ढोया जायगा। मुझे तो माफ करिए आप लोग!" हरिहर काका ने कहा।

"ठाकुर विश्वनाथ राय ही...!" जगत नारायण ने कहा।

"नहीं... नहीं... मैं नहीं!" ठाकुर विश्वनाथ राय ने साफ इन्कार किया।

"यह नहीं-नहीं... हां-हां कब तक चलती रहेगी?" सभा में पीछे उत्तर-पश्चिम के कोने में बैठे किसी आदमी ने पूछा।

"लेकिन फैसला हो तो कैसे?" सबके सामने यही सवाल था।

→

जब वर्षों के द्वेष मिट गये !

बेगूसराय क्षेत्र में धाँय-धाँय ग्रामदान के हस्ताक्षर हो रहे थे। कौतुक था, मामूली अपरिचित कार्यकर्ता दिन भर में बड़े-बड़े भू-स्वामियों के ग्राम का भी ग्रामदान कराकर आ जाते थे। पर नवलगढ़ प्रश्नवाचक चिन्ह बना हुआ था। जो भी कार्यकर्ता जाता, उल्टे-पाँव वापस आ जाता। वहाँ किसीका किसीसे परिचय नहीं। गाँव में ४९ वर्षों से खचम-खच मुकदमेबाजी चल रही थी। गाँव का हर परिवार मुकदमे में उलझा हुआ—कोई मुदई, कोई मुदालह, कोई गवाह, तो कोई जमानतदार।

समस्या भाई गोखले के सामने आयी। दो हनुमान (कार्यकर्ता) गाँव में बैठक बुलाने के लिए भेजे गये। निश्चित तारीख को भाई गोखले कन्धे पर बड़ा थैला लटकाये, अपने साइटिका से पीड़ित पाँव को घसीटते हुए नवलगढ़ माध्यमिक विद्यालय पहुँचे, पर वहाँ कोई जानकारी नहीं ! सोचा, हाईस्कूल में पूछें। वहाँ पता चला कि हाँ, बैठक तो है, पर कोई आये नहीं। भाई गोखले एक बेंच पर बैठ गये। एक शिक्षक ने पूछा—'आप ही ग्रामदान लेने आये हैं ? बड़ा छोटा थैला है !' सारे शिक्षक ने कहकहा लगायी ! प्रश्नों की झड़ी—एक शिक्षक भाई अधिक मुखर हो रहे थे। उनके एक-एक व्यंग्य पर कहकहे लग रहे थे। इतने में एक सज्जन आये। शिक्षकगण थोड़ा सम्भल गये। भाई गोखले को यह भाँपते देर न लगी कि ये यहाँ के प्रधानाध्यापक हैं। उन्होंने विनम्र स्वर में निवेदन किया कि प्रधानाध्यापक साहब, आपके सामने एक व्यक्ति कटघरे में खड़ा है। मेरे मित्रों के अनेक आरोप एवं टीका हैं। मैं न्यायाधीश की तलाश में था। आप कृपाकर यह जिम्मेवारी उठाकर मुझे सफाई देने का मौका दें। एक-एक प्रश्न का उत्तर प्रारम्भ हुआ। धीरे-धीरे सारे शिक्षक मौन हो गये। प्रश्नकर्ता, शिक्षक भाई की आँखें सजल हो गयीं।

अबतक सूर्यनारायण विदा हो गये थे। भाई गोखले यहाँ से कहाँ जायँ ? स्कूल का चपरासी चाभी का गुच्छा लेकर खड़ा है। शिक्षक संकोच में बैठे हैं—सभी किसी-न-किसी परिवार के कायमी अतिथि। अन्त में एक युवक ने उन्हें अपने साथ लिया। एक दरवाजे पर जाकर बिठाया। बताया, गाँव के आप जैसे अतिथि इन्हींके यहाँ ठहरते हैं। वहाँ उन्हें पता चला कि जो सज्जन उन्हें वहाँ तक ले आये थे, उनका वह खुद का दालान नहीं था। अन्धेरा हो चुका था, लाचार वहीं रहना पड़ा।

गृहपति गाँव के महाभारत के महारथी थे। रात में ग्रामदान का विचार उन्होंने धैर्यपूर्वक सुना। आसपास के ग्रामदान की खबर मिली।

सुबह भाई गोखले पाँच बजे दूसरी पंचायत जाने को तैयार ! देखा, सामने कमला बाबू चाय लेकर खड़े हैं। "क्या हमारा गाँव ग्रामदान नहीं हो सकता? आप भी हमें इसी प्रकार छोड़कर चले जायेंगे ?" भाई गोखले ने पूछा—"क्या आपका समर्थन मिलेगा ?" "क्या पूछते हैं, गोखले बाबू। यदि आज भी हमारा गाँव नहीं बना तो फिर ऐसा अवसर कब मिलेगा? आप कृपाकर दो घण्टे का समय दें ?"

सूर्यनारायण उदय हो रहे हैं। पचास वर्ष के बाद श्री कमला बाबू श्री चन्द्रमौली बाबू की दालान पर हाजिर हैं। द्वेष की दीवार प्रेमाश्रु से पिघल गयी। दोनों एक घण्टे में साथ होकर गाँव के सभी दरवाजे पर घूम गये। देखते-देखते भाई गोखले के सामने 'ग्राम-समाज' उपस्थित हो गया। ग्रामदान के विचार बताये गये। कुछ युवकों ने दो-चार प्रश्न पूछे। हस्ताक्षर होना शुरू हुआ—पहले श्री चन्द्रमौली बाबू, उसके नीचे श्री कमला बाबू और फिर सारा गाँव !

—निर्मलचन्द्र

→ रामधनी बाबू ने सुझाया, "एक उपाय है। सब लोग पाँच मिनट के लिए मौन होकर भगवान का ध्यान करें, और अपने दिल से पूछें कि सबसे अधिक गाँव की भलाई सोचनेवाला आदमी गाँव में कौन है। फिर सब अपनी-अपनी बात कह दें। जितने लोगों के नाम लिये जायँ, उनके नामों की पर्ची बनायी जाय, फिर सबको एकसाथ मिलाकर रख दिया जाय और किसी छोटे बच्चे से उसमें से एक पर्ची निकलवायी जाय, उसमें जिसका नाम आये, उसे ग्रामसभा का अध्यक्ष माना जाय।"

रामधनी बाबू की बात लोगों को पसन्द आयी। वैसा ही किया गया। कुल ७ नाम आये। जब एक गोद के बच्चे से पर्ची निकलवायी गयी तो बलिराम पाँड़े का नाम आया।

बलिराम पाँड़े ने भी बहुत ना-नू...की, लेकिन सबकी बात माननी ही पड़ी। और तब ऐसा लगा कि गाँव की एकता के आकाश में घिर आये फूट के काले बादल बरसकर खत्म हो गये हैं, और आसमान साफ हो गया है। (क्रमशः)

राजनीति से संन्यास

प्रश्न : स्वतंत्रता के बाद से आपने राजनीति से संन्यास क्यों लिया ?

विनोबा : स्वतंत्रता के बाद मैंने राजनीति से संन्यास लिया, वह जो जानकारी मेरे बारे में आपको मिली है, वह मुझे खुद को नहीं है। स्वतंत्रता के पहले भी और बाद में भी मैं जनता की शक्ति बनाने का काम ही करता रहा। लोक-शक्ति खड़ी करनी है, राजनीति यानी राजसत्ता के द्वारा लोगों पर हुकूमत चलाना। यह पुरानी बात हुई। आज यह सत्ता लोगों के हाथ में रहे, यह बाबा की कोशिश है, जिसको लोक-नीति नाम दे सकते हैं। उत्तम राजनीति का नाम लोक-नीति। उस अर्थ में न जयप्रकाशजी ने, न मैंने राजनीति छोड़ी है। खोड़े साहब सामने बैठे हैं। एक जमाने में वे प्रान्त के मुख्यमंत्री थे। तब वे जिस राजनीति में थे, उसमें आज नहीं हैं। लेकिन आज भी वे राजनीति में ही हैं, जिसे लोक-नीति कहा जायेगा।

स्त्री-शक्ति

प्रश्न : स्त्रियाँ कोमल स्वभाव की होती हैं, परन्तु शक्ति का रूप उन्हें ही माना गया है। किसी पुरुष की कल्पना क्यों नहीं की गयी ?

विनोबा : बात सही है। स्त्री को शक्ति माना जाता है। पुरुष की कल्पना शक्ति के रूप में क्यों नहीं हुई ? ऐसा कभी नहीं कहते कि पुरुष-शक्ति, स्त्री-शक्ति कहते हैं। हमने भी 'स्त्री-शक्ति' नाम की किताब लिखी है, जिसमें स्त्रियों की शक्ति के बारे में कहा है। गीता में भी कहा है कि सात शक्तियाँ हैं। और वे स्त्री-शक्तियाँ हैं, क्योंकि कठोरता में जितनी शक्ति है, उससे कोमलता में बहुत ज्यादा शक्ति है। जिसमें कोमलता होगी वह दूसरे के हृदय में प्रवेश करता है और वहीं रह जाता है। जो कठोर होता है, वह हृदय में प्रवेश नहीं करता। वह हाथ पकड़ेगा, कान पकड़ेगा, परन्तु हाथ पकड़ने से और कान पकड़ने से ज्यादा शक्ति तो हृदय पकड़ने में है। कान तो बैलों के पकड़ना चाहिए। कान पकड़ने से बैल काबू में आते हैं। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि जो कोमल स्वभाव के होते हैं, वे बैलों के हृदय पर भी कब्जा कर लेते हैं। बैल उनका उत्तम सेवक होता है। और कुत्ते पर भी वे कब्जा कर लेते हैं। कुत्ता भी उनका उत्तम सेवक होता है। एण्ड्रोक्लिस और सिंह की कहानी मशहूर है। उसने सिंह को भी कोमलता से वश में कर लिया था।

छूत-अछूत भेद

प्रश्न : आज भी बहुत स्थानों पर हरिजनों का कानून बनते हुए भी कुओं से पानी नहीं भरने दिया जाता है। पुलिस व सत्ताधारी भी सक्रियता से कानून को अमल में लाने के लिए योग नहीं देते। ऐसी दशा में क्या हरिजन लोग ईसाई या कम्युनिस्ट समुदाय में प्रवेश नहीं करेंगे ?

विनोबा : यह बात सही है कि यद्यपि कानून में छूत-अछूत भेद नहीं रहा है; फिर भी गाँवों में वह विद्यमान है। उसकी जिम्मेवारी सरकार पर नहीं डाल सकते। क्योंकि कानून में भेद नहीं है और सरकार में हरिजन मंत्री भी होते हैं। लेकिन गाँव में पिछड़े हुए लोग होते हैं। उनमें धर्मनिष्ठा होता है, जाति की भावना होती है। इसलिए गाँव-गाँव में जाना होगा, समझाना होगा। वहाँ जायेंगे और सभा करेंगे तो सभा में हरिजन और दूसरे लोग इकट्ठा बैठेंगे नहीं। तो हम उनको समझायेंगे। यह सारा काम करना होगा। यह काम लोगों को करना होगा, क्योंकि यह ज्ञान-प्रचार का काम है। यह सरकार की मदद से नहीं होगा। हरिजन सेवक संघ नाम की एक संस्था है। मैं उनसे कहता हूँ कि तुम लोग अलग संघ क्यों बनाते हो। बापू ने तो कहा था कि सब संघ को सर्व सेवा संघ में विलीन हो जाना चाहिए। लेकिन वह अलग रहा। परिणाम यह हुआ कि सरकार से मदद प्राप्त करके काम करना पड़ा। ऐसे काम तो लोगों को करना पड़ता है, सरकार से नहीं होता।

एक दफा पंडित नेहरू ने मुझे कहा था कि ये हरिजन सेवक संघ और दूसरे संघ अच्छा काम करते हैं और सरकार से मदद माँगते हैं। अच्छे काम को मदद देना सरकार का कर्तव्य है, सरकार मदद देती है; लेकिन जैसे-जैसे ये सरकारी मदद लेते हैं वैसे-वैसे फीके पड़ते जाते हैं। होना तो यह चाहिए कि एक दफा सरकार से ४० प्रतिशत मदद ली और ६० प्रतिशत लोगों से प्राप्त किया, तो दूसरे साल ६० प्रतिशत मदद सरकार की होगी और लोगों से ४० प्रतिशत प्राप्त करेंगे। तीसरे साल ६० प्रतिशत की, ७० प्रतिशत सरकार की मदद होगी। तो, ये लोग इस प्रकार सरकार पर अवलम्बित होते हैं और फीके पड़ते हैं।

[गाँव के प्रमुख लोगों के साथ की चर्चा से रामानुजगंज, २१-११-'६८]

•

www.vinoba.in

'बाबा गरीबों का देवता है'

ग्यारह वर्ष पूरे हुए बाबाजी (बाबा राघवदास) को देह छोड़े। पर हमें उनकी याद आज भी बनी हुई है। बाबाजी का जीवन सदा हमें प्रेरणा देता रहेगा। उनके जीवन के अनेक प्रसंगों में से कुछ प्रसंग हम यहाँ दे रहे हैं।

सन् १९३४ में पहली बाढ़ आयी थी। राप्ती और सरयू की बाढ़ से गोरखपुर-देवरिया जिले त्रस्त थे। गाँव डूब रहे थे और उनके निवासी नावों और जहाजों पर लादकर सुरक्षित स्थानों में पहुँचाये जा रहे थे। कछार क्षेत्र का एक गाँव राप्ती में विलीन हो रहा था। बाबाजी गोरखपुर से नाव लेकर गीता प्रेस के कुछ कर्मचारियों-सहित उस गाँव में पहुँचे। नाव देखकर गाँववाले दूर ही से दौड़-दौड़कर नाव में आकर बैठ गये। बाबाजी एक बुढ़िया की झोपड़ी में गये। उन्होंने कहा, "माता, सब लोग चले गये, तुम क्यों नहीं नाव पर चलती हो?" बुढ़िया ने कहा, "बाबा, हम नाहीं जाइब। मरब चाहे जीयब, आपन मड़ई नाहीं छोड़ब।" बाबाजी ने बुढ़िया से बहुत अनुनय-विनय किया। उसने कहा, "अच्छा, जो हम चलीं त हमार चक्की कैसे चली?" बाबाजी ने कहा, "मैं चक्की ले चलूँगा।" और यह कहते ही उन्होंने चक्की के दोनों पाट सिर पर उठा लिये। आगे-आगे बुढ़िया और पीछे-पीछे बाबाजी, चार फर्लाङ्ग चलकर नाव पर आये। वह दृश्य देखकर सभी लोग दंग रह गये!

× × ×

सन् १९३८ की बाढ़ ने उग्र रूप धारण कर लिया था। जब सरयू पार के आजमगढ़वाले देवारा के सैकड़ों गाँव डूबने लगे, तो बाबाजी ने दौड़-धूपकर जहाज की व्यवस्था की, जिससे कई हजार की संख्या में बाढ़-पीड़ित बरहज लाये गये। कई हजार बाढ़-पीड़ित स्त्रियों, बच्चों, आबालवृद्धों को भोजन देना आसान नहीं था। १७ महीनों तक बरहज में बाबाजी ने इनके रहने-सहने और भोजन की व्यवस्था कैसे की, यह कोई आज तक पूर्ण रूप से नहीं जान सका। बाढ़-पीड़ितों के रहने के लिए आश्रम की सभी संस्थाएँ बन्द रहीं और मकान खाली किये गये। बाढ़-पीड़ित-निवास भर चुका था। एक दिन दोपहर के समय बाबाजी बाढ़-पीड़ितों में घूमकर उनका दुःख-सुख पूछ रहे थे। इतने में उनकी दृष्टि एक हरिजन महिला पर पड़ी, जो एक बकरी के बच्चे को गोद में लेकर अपना दूध पीला रही थी। बाबाजी ने कहा, "यह क्या?" साथ के अन्य लोग इसकी गंभीरता को नहीं सोच पाये। बाबाजी और आगे बढ़े, उन्होंने सही बात जाननी चाही। पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह बकरी के बच्चे को इसलिए दूध पिला रही है कि इसकी माँ पैदा होते ही मर गयी। आज यह तीन महीने से इसे अपने बच्चे के हिस्से का दूध पिलाकर जिला रही है। बाबाजी ने कहा, "धन्य हो माता, बकरी के बच्चे पर इतना स्नेह! अपने बच्चे को जमीन पर लिटाकर बकरी के बच्चे को दूध पिला रही हो।" बाबाजी मातृत्व की इस महानता और मातृ-हृदय की इस कोमलता को स्मरण कर फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने उसे बरहज की हरिजन-बस्ती में रहने के लिए स्थान दिया। झोपड़ी बनवा दी, फिर उसको बाबाजी ने कुशीनगर में भगवान् बुद्ध की निर्वाण-भूमि में स्थान दिया। वह आज तक अपने परिवार के साथ है।

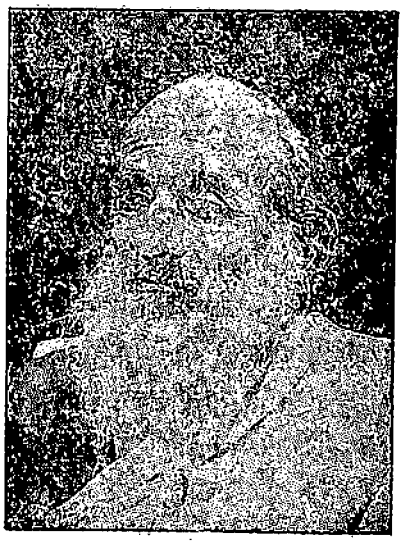

बाबा राघवदास

× × × ×

ग्रीष्म की आधी रात थी। चारों ओर सन्नाटा था। इसी समय दो-तीन हट्टे-कट्टे आदमी आश्रम की कुटिया के सामने आये। उन्होंने साधुओं और ब्रह्मचारियों से पूछा, "परमहंसजी कहाँ हैं?" "सो रहे हैं।" "मुझे उनका दर्शन करना है।" बाबाजी जगाये गये। एक नाटे कद का अत्यन्त सबल आदमी सामने आया। बाबाजी का चरण-स्पर्श किया और हाथ जोड़कर बोला, "सरकार, हमारा नाम कोमल है। आपके दर्शन के लिए बड़ी दूर से आ रहा हूँ। मुझे पकड़ने के लिए पुलिस हमेशा लगी रहती है। अधिक देर तक रुक नहीं सकता। यह लीजिए, तिलक स्वराज्य-फण्ड का रुपया।" ऐसा कहते हुए सौ रुपये नीचे रख दिये। हाथ जोड़ा और चलता बना।

यह कहता गया: "बाबा गरीबों का देवता है। मैं गरीबों को सताता नहीं हूँ। आपका नाम और यश सुनकर यहाँ तक आया। दर्शन पाकर जीवन सफल हो गया।"

www.vinoba.in

करुणा की मूर्ति गांधी

चम्पारण का एक करुण गम्भीर प्रसंग है। किसानों का सत्याग्रह चल रहा था। महात्माजी के सत्याग्रह में सभी भाग ले सकते थे। सैनिक-युद्ध में बन्दूक चला सकनेवाले ही काम आते हैं, लेकिन जिस प्रकार छोटे से लेकर बड़े तक सब राम-नाम लेते हैं, उसी प्रकार सब अपने-अपने आत्मा के बल पर इसमें भाग ले सकते हैं। सत्याग्रह में तमाम लोग शामिल हो सकते हैं। चम्पारण की उस सत्याग्रही सेना में कुष्ठरोग से पीड़ित एक खेतिहर मजदूर था। वह पैरों में चिथड़ा लपेटकर चलता था। उसके घाव खुल गये थे। पैर खूब सूजे हुए थे। असह्य वेदना हो रही थी। लेकिन आत्मिक शक्ति के बल पर वह महारोगी योद्धा सत्याग्रही बना था।

एक दिन शाम को सत्याग्रही योद्धा अपनी छावनी पर लौट रहे थे। उस महारोगी सत्याग्रही के पैरों के चिथड़े रास्ते में गिर पड़े। उससे चला नहीं जा रहा था। घावों से खून बह रहा था। दूसरे सत्याग्रही तेजी से आगे बढ़ गये। महात्माजी सबसे आगे रहते थे। वे बड़े तेज चलते थे। दांडी-कूच के समय भी साथ के ८० सत्याग्रही पीछे-पीछे सरकते चलते थे, लेकिन महात्माजी तेजी से आगे बढ़ जाते थे। चम्पारण में भी ऐसा ही हो रहा था। पीछे छूट जानेवाले उस महारोगी सत्याग्रही का ध्यान किसीको नहीं रहा।

आश्रम पहुँचने पर प्रार्थना का समय हुआ। बापू के चारों ओर सत्याग्रही बैठे। लेकिन बापू को वह महारोगी दिखाई नहीं पड़ा। उन्होंने पूछताछ की। अन्त में किसीने कहा: "वह जल्दी चल नहीं सकता था। थक जाने से वह पेड़ के नीचे बैठा था।"

गांधीजी एक शब्द भी न बोलकर उठे। हाथ में बत्ती लेकर उसे खोजने बाहर निकल पड़े। वह महारोगी राम-नाम लेते हुए एक पेड़ के नीचे परेशान बैठा था। बापू के हाथ की बत्ती दीखते ही उसके चेहरे पर आशा फूट पड़ी। भरे गले से उसने पुकारा: 'बापू।'

गांधीजी कहने लगे: "अरे, तुमसे चला नहीं गया, तो मुझसे कहना नहीं चाहिए था?" उसके खून से सने पैरों की ओर उनका ध्यान गया। गांधीजी ने चादर फाड़कर उसके पैर को लपेट दिया। उसे सहारा देकर धीरे-धीरे आश्रम में उसके कमरे में ले आये। बाद में उसके पैर ठीक तरह से धोये। प्रेम से उसे अपने पास बैठाया। भजन शुरू हुआ। प्रार्थना हुई। वह महारोगी भी भक्ति और प्रेम से ताली बजा रहा था। उसकी आँखें डबडबा रही थीं। उस दिन की प्रार्थना कितनी गंभीर और कितनी भावपूर्ण रही होगी!

नम्रता ने ही चकमा दिया

यह कहानी सन् १९४२ की है, जब कि गांधीजी आगाखाँ-महल में थे।

बापूजी जेल में भी अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाते थे। वाचन, लेखन, प्रार्थना, कताई, सब काम बराबर चलते थे। बीच में ही कभी कोई नयी भाषा सीखते थे, किसी नये ग्रन्थ का परिचय कर लेते थे। इस तरह चलता था।

उस दिन गांधीजी का जन्म-दिन था। आन्दोलन के उन दिनों में जेल के बाहर सारे देश में जनता बड़ी गंभीरता के साथ वह दिन मनाती थी। उधर सरोजिनी देवी, डॉ० सुशीला नायर आदि ने गांधीजी से कहा: "बापू, आज सारे काम बन्द, आज आपका जन्म-दिवस है।"

बापू ने कहा: "सारा दिन काम बन्द नहीं रखना है। केवल दोपहर के समय कुछ देर बन्द रहे।"

तय हो गया। दोपहर को गांधीजी के परिवार के लोगों ने नया ही खेल शुरू किया। निश्चय हुआ कि संसार के महान् विचारकों के भाषण और लेख लिये जायँ और बारी-बारी से प्रत्येक व्यक्ति उन विचारकों का नाम पहचाने। दूसरों की बारी समाप्त हुई। गांधीजी की बारी आयी। उन्हें कुछ उद्धरण सुनाये गये और सब बापू से कह उठे: "बापू, पहचानिए तो, ये किनकी उक्तियाँ हैं?"

बापू ने कुछ देर सोचकर कहा: "पहली थोरो की है, दूसरी रोमाँ रोलाँ की और तीसरी इमर्सन की या कार्लाइल की है।"

सब चिल्ला उठे: "गलत, बिलकुल गलत!"

फिर उनमें से एक ने कहा: "बापू, ये सारे उद्धरण एक ही व्यक्ति के हैं और उस व्यक्ति का नाम है मोहनदास करमचन्द गांधी।"

बापू हँस पड़े। सब हँसने लगे। अनजाने ही गांधीजी ने अपने को महान् विचारकों की श्रेणी में बैठा दिया था।

यों तो नम्रता आड़े आ जाती, लेकिन उस दिन नम्रता ने ही गांधीजी को चकमा दे दिया था।

—साने गुरुजी

१३ जनवरी, '६८

www.vinoba.in

चन्द्र की खोज

२१ दिसम्बर को धरती के तीन मानव (फ्रैंक बोरमैन, जेम्स ए० लावेल जूनियर और विलियम ए० एण्डर्स) चन्द्रमा की यात्रा पर निकले। २,३८,८३३ मील की लम्बी यात्रा पर उन्हें जाना था। यह एक ऐसी यात्रा थी, जिसमें जान जाने का खतरा था। इसलिए यह बड़े साहस की यात्रा थी।

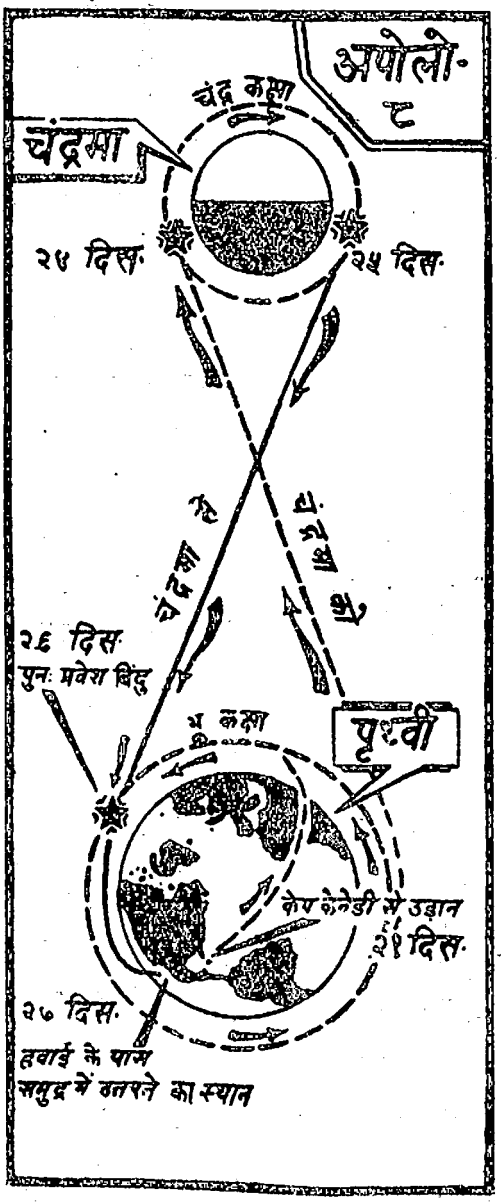

जिस यान (अपोलो-८) से ये यात्री यात्रा पर निकले थे, वह २५ हजार मील प्रति घंटे की रफ्तार से केपकैनेडी के अमेरिकी 'चन्द्रयान-अड्डे' से उड़ा। उस यान का आकार जितना बड़ा था और वजन में जितना भारी था उससे ऐसा नहीं लगता था कि वह उड़नेवाला कोई यान था। यह यान ३६४ फुट ऊँचा तथा लगभग ३१ लाख सेर वजन का था। यह यान उड़नेवाली मशीन के बजाय एक ऊँची अट्टालिका जैसा लगता था। लेकिन जिस रोज वह यान यात्रियों को लेकर आकाश में उड़ा, दुनिया के लोगों की निगाहें आकाश की ओर उठ गयीं, कान रेडियों तक पहुंच गये। लोग भगवान से प्रार्थना करने लगे कि वे तीनों यात्री अपनी यात्रा की मंजिल पूरी कर धरती पर सकुशल उतर जायं। सात दिन की उनकी यात्रा बिना किसी बाधा के शुरू हुई। २३ दिसम्बर को पृथ्वी से १ लाख ६४ हजार मील की दूरी पर यान पहुंच गया। और २४ दिसम्बर को यान चन्द्रमा की परिधि में पहुंचा। जब यान चन्द्रमा के पिछले भाग में पहुंचा तो ३६ मिनट तक उस यान का पृथ्वी से सम्पर्क टूटा रहा। परन्तु फिर उसका सम्पर्क जुड़ गया और यान चन्द्रमा से केवल ६० मील की दूरी पर रह गया। उसने चन्द्रमा के दस चक्कर लगाये। २० घण्टे चन्द्रमा की परिधि में रहने के बाद २५ दिसम्बर को पृथ्वी के लिए वापस हुआ। चन्द्रमा का चक्कर लगाते हुए यात्रियों ने चन्द्रमा के अनेक चित्र खींचे। चन्द्रमा के धरातल पर मनुष्य के उतरने के स्थान का भी उन्होंने चुनाव किया।

यात्रियों ने बताया कि चन्द्रमा धूसर रेतीले समुद्र तट-सा दिखाई पड़ा।

२७ दिसम्बर को अपने निश्चित समय (भारतीय समय के अनुसार रात्रि के ९ बजकर २१ मिनट पर) पर निर्धारित स्थान पर चन्द्रयान प्रशान्त महासागर में उतरा। दुनिया भर में इस सफल यात्रा की खूब प्रसंशा की गयी। यह सफलता सिर्फ अमेरिका की न होकर पूरी दुनिया की थी, विज्ञान की थी। इस सफलता से यह बात पक्की हो गयी कि जल्दी ही मनुष्य चन्द्रमा के धरातल पर उतरेगा। अमेरिका और रूस, दोनों इस होड़ में हैं कि पहले कौन चन्द्रमा पर उतरेगा। यह बड़ी बात नहीं है कि चन्द्रमा पर दोनों में से पहले कौन पहुँचेगा। चाहे कोई भी पहले पहुँचे, दुनिया के लिए वह दिन बहुत ही खुशी का दिन होगा, जिस दिन मनुष्य चन्द्रमा पर उतरेगा और चन्द्रमा की सही-सही जानकारी प्राप्त करेगा। अगर अमेरिका, रूस तथा दुनिया के अन्य देशों के वैज्ञानिकों ने मिलकर कोशिश की होती तो बहुत पहले ही चन्द्रमा पर मनुष्य उतरा होता!

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा । चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१